International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 2, Issue.1, January 2014
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

''आदिवासियों में अतिथि सत्कार – पांव पखारना प्राकृत धर्म के सन्दर्भ में''

शोधार्थी
श्रीमती सुनीता पन्द्रो
एम.ए. (समाजशास्त्र)
नेट (क्वालीफाईट)
बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

मार्गदर्शिका
डॉ. सरला चतुर्वेदी
प्राध्यापक –समाजशास्त्र विभाग
रामानंद संस्कृत महाविद्यालय
लालघाटी, भोपाल (म.प्र.)

सारांश–

''अतिथि सत्कार दिलों को जोड़ता है''। सम्मान प्रगट करने का तरीका है। उत्साह उमंग और खुशियों से भर देता है। शुभ है, मंगलकारी है, ''प्रेम'' को गहरा करता है। सत्कार से किसी के मन को वश में किया जा सकता है एवं सर्वोत्तम सत्कार है। मानवीय जीवन में अतिथि सत्कार जैसी उत्कृष्ठ भावना कब से और कैसे जागृत हुआ। इसका प्रांरभिक स्वरूप कैसा था, शायद ही कोई बता पायेगा। लेकिन यह निश्चित है कि आदिकाल से आदि मानव ने जब एक दूसरे के नज़दीक आने लगे होगें। एक दूसरे जुड़ने लगे होंगे एक दूसरे से सहारा और सहयोग मिलने पर संगठित समूह की ताकत मेहसूस किए होंगे और एक समूह दूसरे समूह से जुड़कर सामाजिक भावना जागृत हुई होगी तब सम्मान पूर्वक परस्पर मधुर संबंध की इच्छा और इच्छा की पराकष्ठा ही सत्कार करने की भावना को जन्म दिया होगा और इस प्रकार अतिथि सत्कार करने की शुरूआत होकर परम्परा में बदल गई होगी। अतः इसे प्राकृति रूप से मानव की स्वाभिक प्रवृत्ति कह सकते है।''

Please ci te this Article as : श्रीमती सुनीता पन्द्रो, डॉ. सरला चतुर्वेदी ''आदिवासियों में अतिथि सत्कार – पांव पखारना प्राकृत धर्म के सन्दर्भ में'' :International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.1, January 2014

❖ अतिथि सत्कार प्राकृतिक प्रेरणा स्त्रोत : सदियों से संचित अपने ज्ञान अनुभव से मानव यह जान चुका है कि, सृष्टि ब्रम्हाण्ड का कुछ भी प्राकृति से बाहर नहीं है। सबकुछ को प्रकृति अपने से जोड़कर रखी है देव–दानव, विष–अमृत, जल–अग्नि, सुख–दुख, भूख–तृप्ति, अतरिक्ष– तारामण्डल, जन्म–मृत्यु, आकाश–पाताल, आदि प्रकृति के भीतर मानव और मानवता सबकुछ है। बाहर कुछ भी नहीं है। प्रकृति के अनुसार है। तब सृष्टि ब्रम्हाण्ड है। प्रकृति के विरूद्ध जो जायेगा वह नष्ट होगा। प्रकृति नष्ट नहीं होगी, प्रकृति का नियम अटल और शाश्वत है। सतत् और अनंत है। प्रकृति के अनुसार रहने वाला भी प्रकृति की तरह उदार होगा। सर्वकालिक होगा। यही बात प्रकृत धर्म पर चलने वाले आदिवासियों में देखी जा सकती है। यदि गौंड व बैगा जनजातियों का अध्ययन करें तो प्रकृत धर्म के हिमायती है। तो इसी बात की प्रमाण मिलते है कि अनेकों युग परिवर्तनों के बाद भी कितनी सभ्यताऐं बदली लेकिन उनकी संस्कृति में ऐसी सांस्कृतिक विरासत रही है कि निष्छल, निष्कपट, ईमानदार, परिश्रमिक, सदाचारी, सद्चरित्र, न्याय, धर्मप्रिय, व्यक्ति अभी भी कूट कूट झलकता है। जो युगानुसार कम या ज्यादा हो सकती है। लेकिन नष्ट नहीं हो सकती है। आज संसार में अनेकों धर्म व धर्मालम्बियों का इजाद हो चुका है। लेकिन आदिकाल से अब तक गौंड व बैगा जनजाति प्राकृत धर्म पर ही टिका हुआ है। सभी सभी धर्मग्रंथों पर धर्म गुरूवों का सर्वव्यापक एवं सर्वकालिक होने का प्रमाण नहीं मिलता लेकिन बिना धर्मगुरू के प्राकृत धर्म ब्रम्हाण्ड व्यापी एवं सर्वकालिक बना रहेगा। जब तक सृष्टि ब्रमहाण्ड है यह प्रकृति के अनुकूल है। प्रकृति के सबको जोड़ कर चलने वाले प्राकृतिक गुण को आदिमानव ने अपनाया और समूह में रहना सीखा। समूह से कबीले, कबीले से सामाज एवं वर्तमान मानव व्यवस्थाओं तक पहुंचा है। अतिथि सत्कार की भावना ही प्रकृतिक प्रेरणा हो सकती है। अतिथि सत्कार दिलों को जोड़कर सम्मान प्रकट करने का तरीका है। उत्साह उमंग और खुशी से भर देता है। शुभ मंगलकारी है प्रेम को गहरा करता है। सत्कार से किसी के मन को वश में किया जा सकता है। एक सर्वोत्तम संस्कार है। यह परम्परा आदिम जनजाति से शुरू होकर आज के सभ्य समाज में विकसित समाज में मानव सभ्यता के साथ जुड़ा हुआ है। अतिथि सत्कार का तरीका अलग–अलग देशों में कबीलों में जाति धर्मो में भले ही अलग–अलग होंगे। लेकिन प्यार और सकून के लिए इससे अच्छा और शालीन तरीका कोई हो ही नहीं सकता है। कोई भी व्यक्ति एकल या समूह में किसी के घर या परिवार में या राज्य में पहचते है तो घर परिवार के या राज्य के लोग अगन्तुक के साथ अगवानी करते है। यह सृष्टाचार का एक तरीका है। कभी भी किसी भी समय सूचना देकर या बिना सूचना दिए परिचित या अपरिचित में से परस्पर मधुर संबंध का विश्वास के साथ किसी के यहां पहचते है। तक अतिथि मानकर उसे जो व्यवहार दिया जाता है। कदाचित उसे अतिथि सत्कार तो कह सकते है। वर्तमान समय में एक देश के शासनाधिकारी दूसरे देश में शासकीय कार्यो से जायें तो उसकी अगवानी सहित सम्मानित करना सत्कार कहा जायेगा।

❖ आदिवासियों में अतिथि सत्कार के अनेकानेक तरीकों में और पांव पखारने का रिवा़ज एक तरीका है। गौंड़ और बैंगा जनजातियों में अपने रिश्तेदारों एवं पूज्नीय लोगों के पांव पखारते है। कितनी भी दूर से थक कर जब अपना प्रिय अतिथि पहंचता है और उसका पांव एक गढुआ कांसे का भरा हुआ जल एवं कांसे की थाली में पांव धूलाकर आत्मीयता प्रगट करते है। तो उस समय का आत्मीय आनंद का वर्णन करना कठिन ही कहा जायेगा। क्योंकि उस अनुभव को अहसास करने वाला एवं संवेदनशील एवं जागृत व्यक्ति होता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देंखे तो पैरों की मिट्टी–धूल के साथ–साथ पानी की कोमल ठण्ड से मस्ष्तिक को ठण्डक पहुंचाती है। गर्मी एवं थकावट शांत होती है। प्यार की भावना फूट पड़ती शारीरिक और मानसिक दोंनो पर प्रभाव पॉजिटीव, सकारात्मक असर बनता है। पैर धुलाने वाले दोंनो पर मनोवैज्ञानिक असर होता है। आदिवासियों में पूरे जीवनकाल में तीन प्रमुख संस्कार आदिकाल से लेकर अब तक बराबर प्रचलन में हैः– जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार – जन्म संस्कार में शिशु के जन्म लेने के बाद प्रथम पांच दिनों को अशुद्धि काल स्वीकार किया गया है। इस दरमियान प्रभावित परिवार में सभी प्रकार के देवालय कुल देवालय से लेकर ग्राम देवालय गण गणिदेवालय एवं संसार के देवी–देवालयों में पूज्यनीय स्थलों सिद्ध पीठों में माननीय आना–जाना, हुम–थूप, भेंट–चढोत्री, पूजा–पाठा प्रत्यक्ष में मना रहता है लेकिन माध्यम से या स्वंय मन ही मन शक्तियों की स्मरण कर सकते है। जचकी (डिलेवरी) फिर छटवे दिन छटी संस्कार मानने का रिवाज़ घर एवं देवी देवालय की साफ–सफाई, लिपाई–पुताई, कपडो की सफाई धुलाई सब तरफ हल्दी तेल दूध का मिश्रण छिड़कर पवित्र करते है उसके बाद देवालय पूजन भेंट किया जाता है। जजा–बच्चा दोंनो को स्नान उवटन के बाद वस्त्र आभूषण देते है। और नए नन्हें मेहमान को करधन पहनाते है। सबसे उल्लेखनीय बात है। नये मेहमान का पांव धुलाकर सभी भेंट और आर्शीवाद देते है।

❖ दूसरा सांस्कारिक घटना, विवाह–शादी का हैः– दूसरा संस्कारिक घटना शादी संस्कार का है। क्षेत्रीय / जातीय एवं प्रचलित धर्मानुसार रीति– रिवाजों जिस प्रकार के भी हों, लेकिन दुल्हा–दुल्हन को पांव–पखार कर शादी का तिलक लगातर (बंदावन एंव टिकावन) भेंट शामिल है। उनके नये जीवन क्रम, नई जिम्मेदारी की सफलता के लिये आर्शीवाद देना शामिल है। इस प्रकार पांव पखारनी स्वागत–सत्कार का एक हिस्सा है। जिसे जीवन में अपनाकर चल रहे है। इसे प्राकृतिक जीवन जीने का एक हिस्सा मानकर चलना चाहिए क्योंकि आकाश, देव, धरती माता को प्रतिवर्ष से पांव पखारने नहलाकर, वर्ष करने धतरी की श्रृंगारित होने में योगदान जोड़ती है।

❖ पौराणिक कथाओं में वर्णित प्राचीन युगों के युग पुरूषों के समय में पांव पखारने के दृष्टांत को सामने रख सकते हैं। जैसे– सतयुग में कभी विष्णु जी, ब्रम्ह लोक में श्री श्री ब्रम्हा जी से मिलने आयें। सृष्टिकर्ता ब्रम्हा जी ने उनकी अगवानी की और पांव पखारकर जल को सुरक्षित रख लिया। कहते हैं वही

पवित्र जल गंगा कहलायी। त्रेता युग में पुरूष श्री रामचंद्र जी हुये। 14 वर्ष के वनवास गमन के समय गंगा पार करने से पहले पांव पखारने के लिये केवट अड़ गये थे। बिना पांव पखारे अपने नांव में पांव नहीं धरने दिया। श्रीराम सीता के पांव पखारकर नांव में बैठाया और नदी पार कराया। द्वापर युग में युग पुरूष श्री कृष्ण जी हुये, पांडव श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्टर अपने राज्य सूर्य यज्ञानुष्ठान में सर्वेश्रेष्ठ एंव प्रथम पूजय श्री कृष्ण को मानकर सबसे पहले उन्हीं का पांव पखारने का पुन्य कार्य किए और पांडवों का यज्ञ निर्विध्न सफल सिद्ध हुआ। इस प्रकार पांव पखारने का विशेष महत्व आदिकालों में भी था। इस घौर कलयुग में अनेकों महामानव हैं लेकिन युग पुरूष किसे कहें? समझ में नहीं आता। देवी शक्तियों का अवतरित रूप हमने श्री माता जी में देखा था जो अर्न्तयामी, त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ थीं। माता की शक्ति यात्रा एवं खुला धामों में दर्शनार्थी भक्त, सेवक, पुजारी एवं समस्त अर्जीदारों को प्रत्यक्ष प्रगट मनोवांछित महिमायें प्रदान कर सर्वेश्रेष्ठ का प्रमाण दे चुकी हैं। जिन्होंने भी उनके पांव पखारकर अगवानी की ऐसे भक्तों को अमर भक्ति का वरदान देकर उनका जीवन सार्थक किया है। आज वही भक्त माता द्वारा स्थापित एवं जागृत सिद्ध स्थर, सिद्ध पीठों में जनहितार्थ देवीय कार्य करके प्रकृत धर्म के देव–दूत बने हुये है। यदि माता द्वारा प्रगट ज्ञान का वृहत्त संस्कारिता आचरण अपनाया जाये तो अनेकों जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय में भटक रहे मानव समुदायों को प्रृकति सम्मत चलने का एवं घौर संकट में फंसी धरती को उदाहरण :– रेडियशन से धरती का बचाने वाली ओजोन परत का पतला होना एवं कार्बन + मीथेन जैसी जहरीली गैसों की मात्रा बढ़ाने से विश्व तापमान बढ़ना दिनों दिन लगातार धरती की हरियाली घटने से वातावरण असंतुलन आदि मानव जनित आपदाओं से जीवों का महाविनाश का खतरा निरंतर बढ़ता जा रहा है। पुनः सतयुगी काल में लाया जा सकता है।

निष्कार्ष :–

इस प्रकार हम देखते है कि पांव पखारना प्रकृति प्रेरित प्रकृति समस्त लाभदायी सार्थक संस्कारित कार्य है। शक्ति स्वरूपों के पांव पखारने से मन निर्मल होता हैं। और कार्य सिद्ध होता है। आदिवासियों में विशेष रूप गौंड व बैगा जनजातियों में यह प्रथा आज भी कायम है। ''प्रकृति पुत्र बड़ा देव'' पूजन एवं ''सेवाजुहार'' आज भी कायम है और संसार के लिए प्रेरणादायी है। रजस्वला अशुद्धि नारी की व्यक्तिगत अशुद्धि है। अतः इस स्थिति में उनका पांव नहीं पखारते और नहीं उन्हें पांव पखारने का कार्य दिया जाता है। रजस्वला धर्म पालन–प्राकृत धर्म शक्ति साधक विद्वानों ने प्रकृति की स्त्री लिंग (Feminine) ओर सृष्टि को पुलिंग (Masculine) माना है। जैसे स्त्री और पुरूष एक दूसरे के पूरक होते है। प्रकृति में ब्रम्हाण्ड है – शक्ति निराकार और अदृश्य है। भौतिक शक्ति को तों वैज्ञानिक तरीके से जाना समझा जा सकता है लेकिन ''अलौकिक एवं दिव्य शक्तियों को नही'' भौतिक शक्तियों को विज्ञान ने ऊर्जा स्त्रोत

माना है और ऊर्जा की पहचान छः रूपों में किया है, वे क्रमशः प्रकाश, विद्युत, ताप, ध्वनि, चुम्कतत्व और कार्य की ऊर्जा के बीच संबंध को $E=mc^2$ में स्थापित किया हैं जिस पर अनेकों वैज्ञानिक शोध चल रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भलावी लीला – 2011 प्राकृत धर्म एवं संस्कृति शिक्षा संदेश
2. प्रकाश– देवबहादुर पुजारी संगठन (जिला डिण्डौरी म.प्र.)
3. धुर्वे राजेन्द्र – प्राकृत धर्य एवं संस्कृति शिक्षा संदेश)
4. परदेशी राम वर्मा –
5. के आर शाह मई–2012 आदिवासी सत्ता

   (भारत की नम्बर–1 सामाजिक समाचार पत्रिकायें
6. देवहरणगढ़ पुजारी संगठन (विध्यांपुरी), डिण्डौरी

   जिला डिण्डौरी (म.प्र.)
7. आदित्य निवास वार्ड नं. 02, झुपखार डिण्डौरी जिला – डिण्डौरी (म.प्र.)– 481880